International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 8 Issue 2, February 2018
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

राष्ट्रीय चेतना के संदर्भ में दिनकर और नेपाली

डा. श्याम बाबू प्रसाद
प्रधानाचार्य,
मीनापुर मध्य विद्यालय, मीनापुर, मुजफ्फरपुर

रामधारी सिंह दिनकर (23.09.1908–23.04.1974) और गोपाल सिंह नेपाली (11.08.1911–17.04.1963) दोनों उत्तर छायावाद के महत्त्वपूर्ण कवि हैं। दोनों का सम्बन्ध उत्तर बिहार से रहा है। दोनों ने अपनी रचनाओं के द्वारा राष्ट्रीय चेतना को अभिव्यक्त किया है। हिमालय दोनों कवियों का प्रिय प्रतीक है। महात्मा गाँधी के प्रति दोनों कवियों की अटूट निष्ठा रही है। दोनों ने नेहरू पर भी लिखा है और चीन आक्रमण के समय देश को जगाने का काम भी दोनों कवियों ने किया है। दोनों की काव्य–यात्रा की लगभग साथ ही शुरू हुई थी। दोनों कवियों में समानता के कई बिन्दु हैं, दोनों की शैली अलग–अलग है किन्तु अन्तर्वस्तु की दृष्टि से ये एक–दूसरे से मिलते भी हैं, टकराते भी हैं।

1917 से 1947 तक गाँधी जी ने इस देश के राजनीतिक जीवन को स्पंदित किया था, सुप्त जनमानस को चैतन्य किया था और आस्था और अहिंसा को नये अर्थ दिये थे। महात्मा गाँधी भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलन के शलाका पुरुष हैं। दिनकर और नेपाली दोनों ने गाँधीजी के अभियान के प्रति न केवल आस्था व्यक्त की थी बल्कि उसकी प्रगति के लिए रचनात्मक पहल भी की थी। दिनकर ने गाँधी पर कई कविताएँ लिखीं। 'बापू' शीर्षक काव्य–पुस्तक के वक्तव्य में कवि दिनकर ने लिखा है–'''बापू' कविता की रचना उस समय हुई थी जब बापू नोआखाली की यात्रा कर रहे थे लेकिन देश के दुर्भाग्य से इस कविता का भाव क्षेत्र नोआखाली तक ही सीमित नहीं रहा। पिछली बार बापू बिहार आये तब यह कविता उनके सम्पर्क में रहनेवाले कई लोगों ने सुनी थी। 'वह सुनो, सत्य चिल्लाता है' वाले अंश को सुनकर मृदुला बेन बोल उठीं कि बापू की ठीक यही मनोदशा थी। लेकिन, कौन जानता था कि भविष्यवाणी इतनी जल्द पूरी हो जाएगी और हमें पुस्तक के दूसरे संस्करण में ही बापू की मृत्यु पर रचित शोक–काव्य को भी सम्मिलित कर देना होगा ?''[1]

दिनकर ने गाँधी जी के विराट व्यक्तित्व को इन शब्दों में रेखांकित किया है–

''तू कालोदधि का महास्तम्भ
आत्मा के नभ का तुंग केतु,
बापू! तू मर्त्य–अमर्त्य,
स्वर्ग–पृथ्वी, भू नभ का महासेतु।
तेरा विराट यह रूप कल्पना
पट पर नहीं समाता है
जितना कुछ कहूँ, मगर कहने
को शेष बहुत रह जाता है।''[2]

'बापू' के महाप्रयाण पर दिनकर की वेदना घनीभूत हो गयी और उनका कवि चीत्कार कर उठा–

''यह लाश मनुज की नहीं
मनुजता के सौभाग्य–विधाता की,
बापू की अरथी नहीं चली,
अरथी यह भारत माता की।''[3]

नेपाली ने गाँधी पर अनेक कविताएँ लिखी हैं और कई कविताओं में उनका प्रसंग आया है। कवि ने अपनी पहली कृति 'उमंग' की दो कविताओं–'मोहन से' और 'स्वागत' तथा 'हिमालय ने पुकारा' की दो

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 8 Issue 2, February 2018
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

कविताओं–'अमर सेनानी गाँधी' और 'बापू तुम्हारी प्रार्थना' में गाँधी जी को महानायक के रूप में चित्रित किया है। कवि का कथन है–

''भारत, यह तरुणों का भारत
नाच उठे अब चुटकी पर
पल में क्या का क्या कर दे फिर
मोहन, मेरी मटकी पर।''[4]

गाँधी जी के महत्त्व को रेखांकित करते हुए नेपाली का यह कथन द्रष्टव्य है–

''गाँधी जी ने क्रान्ति–समर को नई दिशा दी, नया मोड़
कहा, प्रेम से सत्याग्रह, व्यक्ति छोड़, कानून तोड़
धर्म भुलाकर आज एक हो
जाटि मिटाकर आज एक हो
राष्ट्र एक हो, राज्य एक हो
जनता की आवाज एक हो?
एक हुये जो अमर रहे वह, बिखरे, गलते चले गये
लिया स्वराज्य अहिंसा से इतिहास बदलते चले गये।''[5]

और कवि का यह कथन भी कितना सार्थक है–

''पहले कटा था एक सर
स्वातंत्रय की बलि–वेदि पर
कितने गये फिर मनुज मर
संघर्ष कर, संग्राम कर
तलवार जिस से रुक गयी, सत्ता विदेशी झुक गयी
वह वंदना थी वंदना, बापू, तुम्हारी वंदना।''[6]

दिनकर और नेपाली दोनों राष्ट्रीय जागरण के कवि हैं। दिनकर ने 'विजय–संदेश' से लेकर 'परशुराम की प्रतीक्षा' तक राष्ट्रीय जागरण को स्वर दिया है, जबकि नेपाली ने 'उमंग' से लेकर 'हिमालय ने पुकारा' तक। दिनकर स्वाधीनता आन्दोलन के दौर में हिमालय को सम्बोधित करते हुए कहते हैं–

''तू मौन त्याग, कर सिंहनाद
रे तपी ! आज तप का न काल
नव–युग शंखध्वनि जगा रही
तू जाग, जाग मेरे विशाल।''[7]

तो नेपाली का हिमालय चीन युद्ध के समय देशवासियों को पुकारते हुए जगाया है–

''धरती का मुकुट आज खड़ा डोल रहा है
इतिहास में अध्याय नया खोल रहा है
घायल है अहिंसा का वजन तोल रहा है
धोखे से गया लूट भाई–भाई का नारा
चालीस करोड़ों को हिमालय ने पुकारा।''[8]

नेपाली हिमालय के महत्त्व को इस तरह व्यक्त करते हैं–

''हम कभी हिमालय को भूले तो दीन हुये, परतंत्र हुये
फिर पुण्य जगा बलिदानों का तो आगे बढ़े, स्वतंत्र हुये
जागे, बन्धन में पड़े हुये
तो फिर रण को उठ खड़े हुये
हम सदा पतन में बड़े हुये

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 8 Issue 2, February 2018
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

दिन एक गुलामी का मन में, सदियों की पीर जगाता है
गिरिराज हिमालय से भारत का, कुछ ऐसा ही नाता है।''[9]

आजादी के बाद नेपाली ने यह भी कहा है–

''आजाद परिन्दों से कह दो, अब यहाँ विदेशी राज नहीं
है ताज हिमालय के सिर पर, अब और किसी का ताज नहीं।''[10]

चीनी युद्ध के समय दिनकर ने 'परशुराम की प्रतीक्षा' के द्वारा देश को उद्‌बोधित किया तो नेपाली ने 'हिमालय ने पुकारा' के द्वारा। दिनकर जहाँ आत्मविश्वास से भरकर यह कहते हैं–

''पर्वतपति को आमूल डोलता होगा
शंकर को ध्वंसक नयन खोलना होगा
असि पर अशोक को मुण्ड तोलना होगा
गौतम को जयजयकार बोना होगा
यह नहीं शान्ति की गुफा, युद्ध है, रण है
तप नहीं आज केवल तलवार शरण है
ललकार रहा भारत को स्वयं मरण है
हम जीतेंगे यह समर, हमारा प्रण है।''[11]

तो नेपाली राष्ट्रीय संकल्प को व्यक्त करते हुए कहते हैं–

''आजादी अभी पाई है खोने के नहीं हैं
इतिहास में फिर दास हम होने के नहीं हैं
जब तक न हटे चीन हम सोने के नहीं हैं
गाँधी की कसम है कहीं पलकें न झुकालो
इन चीनी लुटेरों को हिमालय से निकालो।''[12]

एक ओर दिनकर जयनाद करते हुए कहते हैं–

''चिंतको! चिंतना की तलवार गढ़ो रे!
ऋषियो! कृशानु–उद्दीपन मंत्र पढ़ो रे!
योगियो! जगो जीवन की ओर बढ़ो रे!
बन्दूकों पर अपना अलोक मढ़ो रे!
है जहाँ कहीं भी तेज, हमें पाना है,
रण में समग्र भारत को ले जाना है।''[13]

तो दूसरी ओर नेपाली राष्ट्र को उत्प्रेरित करते हुए कहते हैं–

''ऐसा पावन अवसर फिर–फिर ना आता है
हटता है जो रण से, जन्म वह गवाँता है
जो रण से डरती है, जाति वही मरती है
तलवारों के बल पर, जिन्दगी उभरती है
युद्धों से जीवन की रागिनी सँवरती है
मर्द की हथेली पर, चाँदनी उतरती है।''[14]

इस प्रकार दिनकर और नेपाली की राष्ट्रीय चेतना में साम्य के कई बिन्दु हैं। दोनों कवियों ने सांस्कृतिक प्रतीकों का प्रयोग किया है। गाँधी के प्रति दोनों ने आस्था व्यक्त की है। इन समानताओं के बावजूद दोनों में कुछ विभिन्नताएँ भी हैं। दिनकर युगचारण कवि हैं किन्तु वे संशय से विश्वास की ओर बढ़ते हैं। नेपाली में संशय नहीं है केवल विश्वास है, एक सैनिक का विश्वास, एक योद्धा कवि की आस्था। दिनकर सरकारी सेवा में थे। जिस सरकार की हुकूमत से देश को आजाद कराने का लक्ष्य उनके सामने था उसी की चाकरी करने की मजबूरी भी थी। आजादी के पहले ही दिनकर की कविताओं में पौरुष की कसमसाहट

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 8 Issue 2, February 2018
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

तो है लेकिन खुलकर सरकार के सामने गर्जना करने से उन्हें परहेज भी है। 'परशुराम की प्रतीक्षा' में वे स्पष्ट बोलते हैं क्योंकि लोकतंत्र में शासक की निन्दा करना अपराध नहीं है और प्रश्न विदेशी आक्रमणकारियों से देश की रक्षा का है। इसीलिए वे कहते हैं–

''जातीय गर्व पर क्रूर प्रहार हुआ है
माँ के किरीट पर ही यह वार हुआ है।
अब जो सिर पर आ पड़े, नहीं डरना है
जनमे हैं तो दो बार नहीं मरना है।''[15]

नेपाली ने 1935 में ही संकल्प व्यक्त कर दिया था–

''चल बढ़ बची हुई टुकड़ी अब,
कर न विचार तनिक क्या बीता!
कदम–कदम पर ताल दे रहा
गरज, दमक, हुंकार पलीता!
मरते हैं डरपोक घरों में
बाँध गले रेशम का फीता!
यह तो समर, यहाँ मुट्ठी–भर
मिट्टी जिसने चूमी, जीता!''[16]

संदर्भ

1. बापू, दूसरे संस्करण का वक्तव्य।
2. उपवित्, पृ. 25.
3. उपरिवत्, पृ. 28.
4. उमंग, पृ. 106.
5. हिमालय ने पुकारा, पृ. 61.
6. वही, पृ. 81.
7. संचयिता, दिनकर, पृ. 31.
8. है ताज हिमालय के सिर पर, पृ. 39–40.
9. उपरिवत्, पृ. 44.
10. उपरिवत्, पृ. 56.
11. परशुराम की प्रतीक्षा, पृ. 12.
12. हिमालय ने पुकारा, पृ. 32.
13. परशुराम की प्रतीक्षा, पृ. 12.
14. हिमालय ने पुकारा, पृ. 42.
15. परशुराम की प्रतीक्षा, पृ. 8.
16. है ताज हिमालय के सिर पर, पृ. 22.